॥ श्रीहरिः॥

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

॥ विद्या धर्मेण शोभते ॥
गीता परिवार
॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु अनुस्वार, विसर्ग एवं आघात प्रयोग सहित, चरणानुसार विभाग, मूल संहिता पाठ के अनुकूल

श्रीमद्भगवद्गीता

अष्टम (8वाँ) अध्याय

अक्षरब्रह्मयोग

- लर्नगीता एप्प : app.learngeeta.com
- नया पंजीकरण : Joingeeta.com
- अभ्यास सामग्री : practice.learngeeta.com
- विवेचन सुनें : vivechan.learngeeta.com
- परीक्षा पंजीकरण : exam.learngeeta.com
- YouTube : youtube.com/c/GeetaPariwar
- Instagram : instagram.com/geetaparivar
- साधक पोर्टल : online.learngeeta.com
- पुस्तक क्रय : store.learngeeta.com
- प्रचार सामग्री : learngeeta.com/pracharak
- गीतासेवी बनें : sewa.learngeeta.com
- गीता कक्षा उपहार : gift.learngeeta.com
- Facebook : facebook.com/geetaparivar
- Twitter : x.com/Learn_Geeta

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

ॐ

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथाष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं(न्) तद्ब्रह्म किमध्यात्मं(ङ्), किं(ङ्) कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं(ञ्) च किं(म्) प्रोक्तम्, अधिदैवं(ङ्) किमुच्यते॥1॥

अधियज्ञः(ख्) कथं(ङ्) कोऽत्र, देहेऽस्मिन्मधुसूदन।
प्रयाणकाले च कथं(ञ्), ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः॥2॥

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं(म्) ब्रह्म परमं(म्), स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते।
भूतभावोद्भवकरो, विसर्गः(ख्) कर्मसञ्ज्ञितः॥3॥

अधिभूतं(ङ्) क्षरो भावः(फ्), पुरुषश्चाधिदैवतम्।
अधियज्ञोऽहमेवात्र, देहे देहभृतां(वँ) वर॥4॥

अन्तकाले च मामेव, स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।
यः(फ्) प्रयाति स मद्भावं(यँ), याति नास्त्यत्र संशयः॥5॥

यं(यँ) यं(वँ) वापि स्मरन्भावं(न्), त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं(न्) तमेवैति कौन्तेय, सदा तद्भावभावितः॥6॥

तस्मात्सर्वेषु कालेषु, मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिः(र्), मामेवैष्यस्यसंशयम्॥7॥

अभ्यासयोगयुक्तेन, चेतसा नान्यगामिना।
परमं(म्) पुरुषं(न्) दिव्यं(यँ), याति पार्थानुचिन्तयन्॥8॥

Learngeeta.com

कविं(म्) पुराणमनुशासितारम्,
अणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपम्,
आदित्यवर्णं(न्) तमसः(फ्) परस्तात्॥9॥

प्रयाणकाले मनसाचलेन,
भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्,
स तं(म्) परं(म्) पुरुषमुपैति दिव्यम्॥10॥

यदक्षरं(वँ) वेदविदो वदन्ति,
विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं(ञ्) चरन्ति,
तत्ते पदं(म्) सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये॥11॥

सर्वद्वाराणि संयम्य, मनो हृदि निरुध्य च।
मूर्ध्न्याधायात्मनः(फ्) प्राणम्, आस्थितो योगधारणाम्॥12॥

ओमित्येकाक्षरं(म्) ब्रह्म, व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः(फ्) प्रयाति त्यजन्देहं(म्), स याति परमां(ङ्) गतिम्॥13॥

अनन्यचेताः(स्) सततं(यँ), यो मां(म्) स्मरति नित्यशः।
तस्याहं(म्) सुलभः(फ्) पार्थ, नित्ययुक्तस्य योगिनः॥14॥

मामुपेत्य पुनर्जन्म, दुःखालयमशाश्वतम्।
नाप्नुवन्ति महात्मानः(स्), संसिद्धिं(म्) परमां(ङ्) गताः॥15॥

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः(फ्), पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय, पुनर्जन्म न विद्यते॥16॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

सहस्रयुगपर्यन्तम्, अहर्यद्ब्रह्मणो विदुः।
रात्रिं(यँ) युगसहस्रान्तां(न्), तेऽहोरात्रविदो जनाः॥17॥

अव्यक्ताद्व्यक्तयः(स्) सर्वाः(फ्), प्रभवन्त्यहरागमे।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते, तत्रैवाव्यक्तसञ्ज्ञके॥18॥

भूतग्रामः(स्) स एवायं(म्), भूत्वा भूत्वा प्रलीयते।
रात्र्यागमेऽवशः(फ्) पार्थ, प्रभवत्यहरागमे॥19॥

परस्तस्मात्तु भावोऽन्यो-ऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः।
यः(स्) स सर्वेषु भूतेषु, नश्यत्सु न विनश्यति॥20॥

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तः(स्), तमाहुः(फ्) परमां(ङ्) गतिम्।
यं(म्) प्राप्य न निवर्तन्ते, तद्धाम परमं(म्) मम॥21॥

पुरुषः(स्) स परः(फ्) पार्थ, भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि, येन सर्वमिदं(न्) ततम्॥22॥

यत्र काले त्वनावृत्तिम्, आवृत्तिं(ञ्) चैव योगिनः।
प्रयाता यान्ति तं(ङ्) कालं(वँ), वक्ष्यामि भरतर्षभ॥23॥

अग्निर्ज्योतिरहः(श्) शुक्लः(ष्), षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति, ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः॥24॥

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः(ष्), षण्मासा दक्षिणायनम्।
तत्र चान्द्रमसं(ञ्) ज्योतिः(र्), योगी प्राप्य निवर्तते॥25॥

शुक्लकृष्णे गती ह्येते, जगतः(श्) शाश्वते मते।
एकया यात्यनावृत्तिम्, अन्ययावर्तते पुनः॥26॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

नैते सृती पार्थ जानन्, योगी मुह्यति कश्चन।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु, योगयुक्तो भवार्जुन॥27॥

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव,
दानेषु यत्पुण्यफलं(म्) प्रदिष्टम्।
अत्येति तत्सर्वमिदं(वँ्) विदित्वा,
योगी परं(म्) स्थानमुपैति चाद्यम्॥28॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(यँ्) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नाम अष्टमोऽध्यायः॥

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

स्तर 4 उच्चारण नियमावली

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

माहेश्वर सूत्र

माहेश्वर सूत्रों की उत्पत्ति भगवान नटराज (शिव) के द्वारा किये गये ताण्डव नृत्य से मानी गयी है। डमरु के चौदह बार बजाने से चौदह सूत्रों के रूप में ध्वनियाँ निकली, इन्हीं ध्वनियों से व्याकरण का प्राकट्य हुआ।

1. अइउण् 2. ऋलृक् 3. एओङ् 4. ऐऔच् 5. हयवरट् 6. लण् 7. ञमङणनम् 8. झभञ् 9. घढधष्

10. जबगडदश् 11. खफछठथचटतव् 12. कपय् 13. शषसर् 14. हल्

शब्दावली

- **'प्रत्याहार'** - प्रत्याहार का अर्थ होता है – संक्षिप्त कथन। माहेश्वर सूत्रों के आदि और अन्तिम वर्ण को मिलाकर प्रत्याहार बनता है। उदा. = 'अच्' प्रत्याहार - 'अच्' से 'अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ' इन वर्णों का ग्रहण होगा।
- **लोप** – दो वर्णों की संधि के दौरान किसी वर्ण को हटा देने की प्रक्रिया को लोप कहते हैं।
- **प्रकृतिभाव** – संधि के समय आदेश, आगम या लोप की स्थिति नहीं हो, पदों की पूर्ववत स्थिति रहना।
- **प्रत्यय** – जिन वर्ण या वर्ण समुदायों का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता वे किसी शब्द के पश्चात् लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। प्रत्यय पांच प्रकार के होते हैं – सुप्, तिङ्, कृत्, तद्धित, स्त्री प्रत्यय।
- **उपसर्ग** – ऐसे शब्द जो किसी धातु के पूर्व जुड़ कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या उसी अर्थ की पुष्टि करते हैं। उदा. – हार शब्द में विभिन्न उपसर्ग जुड़कर अनेक अलग-अलग अर्थ के शब्दों की सिद्धि करते हैं – 1. प्रहार, 2. संहार(विनाश), 3. विहार(घूमना)। संस्कृत में कुल 22 उपसर्ग हैं - प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

॥ द्वित्व(आघात) नियम॥

मूल द्वित्व नियम - अनचि च, स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र।

स्वर के बाद संयुक्त वर्ण आने पर संयुक्त वर्ण में प्रथम वर्ण का द्वित्व पाणिनीय व्याकरण के 'अनचि च' सूत्र से एवं पाणिनीयशिक्षा के 'स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र' सूत्र से होता है। यह उत्सर्ग नियम हैं जो अपवाद छोड़कर सभी स्थानों पर प्रयुक्त हो जाता है।

इस नियम के कुछ अपवाद नियम हैं जिनके सूत्र इस प्रकार हैं।

1. परं तु रेफहकाराभ्याम्। *- पाणिनीयशिक्षा*

संयुक्त वर्ण में यदि प्रथम वर्ण रेफ अथवा हकार है तो द्वित्व नहीं होता है। उदा. – पर्युपासते, गुह्यतमम्

2. (न) सवर्णे। *-प्रातिशाख्य*

यदि संयुक्त वर्ण में दोनों वर्ण समान हैं तब वहाँ स्वाभाविक रूप से ही द्वित्व होता है इसीलिये वहाँ अतिरिक्त द्वित्व की आवश्यकता नहीं होती। उदा. – उत्सन्न, मय्यावेश्य

3. त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य *-पाणिनीयशिक्षा*

जब संयुक्त वर्ण में तीन व्यञ्जनों का संयोग हो। उदा. – कृत्स्नम्, भक्त्या

4. प्रथमैर्द्वितीयास्तृतीयैश्चतुर्थाः। *- पाणिनीयशिक्षा*

संयुक्त वर्ण में पांचो वर्ग के सभी वर्णों(स्पर्श वर्णों) का द्वित्व करने में द्वितीय वर्ण से पहले प्रथम वर्ण का और चतुर्थ वर्ण से पहले तृतीय वर्ण का प्रयोग किया जाता है। उदा. – जिघ्रन् = जि(ग्)घ्रन्)

योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(वँ), वासुदेवं(वँ) व्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(वँ) वीरं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

© GEETA PARIWAR
गीता परिवार के साहित्य को किसी भी प्रकार से अन्य संस्था अथवा अन्य स्थान पर उपयोग/प्रकाशित करने से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। अनुमति लेने हेतु पूर्ण प्रयोजन के साथ हमें consent@learngeeta.com पर ईमेल करें।